अध्ययन करग ।

तात्त्विक युक्ति

(Ontological argument)

ईश्वरवादी युक्तियों में तात्त्विक युक्ति का सर्वोपरि स्थान है। अनेक दार्शनिकों ने इस युक्ति का सहारा लेकर ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने का प्रयास किया है। सर्व-प्रथम एन्सेलम ने अपने दर्शन में इस युक्ति को स्थान दिया था। आधुनिक युग के प्रारम्भ में रेने देकार्त (Descartes, 1596-1650) ने इस युक्ति के आधार पर ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने की कोशिश की थी।

Scanned by TapScanner

इस तर्क का नाम तात्विक युक्ति है क्योंकि इसमें ईश्वर को तत्त्वतः समझने का प्रयास किया गया है। दूसरे शब्दों में; ईश्वर परमतत्त्व है, इस परमतत्त्व से हम क्या समझते हैं ? इसे सत्तामूलक तर्क भी कहा गया है, क्योंकि यह सत्ता या अस्तित्व के विश्लेषण पर आधारित है। इस तर्क का प्रयोग मध्ययुग के संत दार्शनिक जैसे— एन्सेल्म और आगस्टाइन ने अधिक किया है। आधुनिक युग में देकार्त, स्पिनोजा और लाइबनिट्ज ने भी इस तर्क का प्रयोग किया है। अतः प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक इस तक का प्रयोग किया गया है। परम्परा से अनेक दार्शनिक इसके समर्थक हैं; अतः इसे परम्परावादी तर्क कहा जाता है।

इस तर्क का सारांश है कि विचार से वस्तु की सत्ता सिद्ध होती है; अर्थात् ईश्वर की धारणा से ईश्वर का अस्तित्व प्रमाणित होता है। एन्सेल्म महोदय का कहना है कि हमारे मन या बुद्धि में अनेक विचार हैं, परन्तु ईश्वर का विचार सर्वोच्च

Scanned by TapScanner

है। इस सर्वोच्च विचार से सर्वोच्च ईश्वर की सत्ता सिद्ध होती है। सर्वोच्च विचार सर्वोच्च प्रत्यय भी कहलाता है। सर्वोच्च प्रत्यय वह है जिसमें विचार के अनुरूप वस्तु हो। हमारे मन में बहुत से ऐसे विचार हैं जिसके अनुरूप वस्तु नहीं। अतः यह विचार सर्वोच्च विचार नहीं। ईश्वर-विचार या ईश्वर-प्रत्यय ही सर्वोच्च है; क्योंकि इसमें विचार के अनुरूप वस्तु है। संक्षेप में, हम कह सकते हैं कि ईश्वर ही यथार्थ में परमसत्ता है। वह सर्वोच्च होने के कारण विचार और वस्तु दोनों रूपों में है। एन्सेल्म कहते हैं "ईश्वर एक सत्ता है, उससे महान् का अनुमान नहीं किया जा सकता। एक प्रत्यय जिसका अस्तित्व केवल हमारी बुद्धि में ही है उतना महान और पूर्ण नहीं होगा जितना कि वह जिसका अस्तित्व बुद्धि के अतिरिक्त स्वतः में भी होगा।" अतः ईश्वर प्रत्यय में ही ईश्वर की सत्ता निहित है। एन्सेल्म की युक्ति निम्नलिखित युक्ति का सारांश यह है कि ईश्वर एक ऐसी सत्ता है जिससे उच्चतर का विचार

"Consideration demonstrates word God to mean that which must be thought as what is greatest, but to be in actuality as well as in thought, is greater than to be in thought alone therefore, God exists not only in thought, but in fact."

सम्भव नहीं है, किन्तु जो विचार केवल मन में विद्यमान है वह उस विचार की अपेक्षा उच्च नहीं है, जिसका विचार और वास्तविकता दोनों में अस्तित्व होता है। इसलिए ईश्वर को अनिवार्यतः अस्तित्ववान स्वीकार किया जाना चाहिए। इस प्रकार ईश्वर विचार एवं वास्तविकता दोनों में अस्तित्ववान होने के कारण सर्वोच्च एवं पूर्ण सत्ता के रूप में प्रमाणित है।[1]

देकार्त महोदय ने भी सत्तामूलक तर्क से ईश्वर की सत्ता को सिद्ध करने का प्रयास किया है। उन्होंने दो रूपों से सत्तामूलक तर्क का स्पष्टीकरण किया है—

(क) ज्यामितिक आधार पर तर्क का प्रतिपादन—ज्यामिति में यह बतलाया जाता है कि त्रिभुज के प्रत्यय से ही यह सिद्ध होता है कि त्रिभुज के तीनों कोणों का योग दो समकोण के बराबर है। ठीक इसी प्रकार ईश्वर प्रत्यय से ही ईश्वर का अस्तित्व सिद्ध होता है। ईश्वर का प्रत्यय सर्वोपरि पूर्ण सत्ता का प्रत्यय

1. "..... Since I am finite, and imperfect I could not of myself have formed the idea of an absolutely perfect being for it is a

Scanned by TapScanner

है (God is supremely perfect being)। इसका तात्पर्य यह है कि जो भी ईश्वर के बारे में जानता है वह उसे पूर्ण रूप में जानता है, अर्थात् अपूर्ण ईश्वर का प्रत्यय तो सम्भव नहीं है। अतः पूर्ण ईश्वर के प्रत्यय में ही पूर्ण ईश्वर का अस्तित्व निहित है।

(ख) कारणता के आधार पर तर्क का प्रतिपादन—पुनः देकार्त का कहना है कि हमारे अन्दर या मेरी बुद्धि में पूर्ण (Perfect) और अनन्त (Infinite) ईश्वर का विचार है। इस विचार का कारण कौन हो सकता है ? हम स्वयं इसका कारण नहीं हो सकते, क्योंकि हम अपूर्ण और सान्त हैं, अतः पूर्ण और अनन्त ईश्वर विचार का कारण तो पूर्ण और अनन्त ईश्वर ही है। यहाँ स्पष्ट विचार से सत्ता या अस्तित्व की सिद्धि होती है।

स्पिनोजा महोदय भी सत्तामूलक प्रमाण का प्रयोग करते हैं। स्पिनोजा के अनुसार ईश्वर का विचार एक पूर्ण अनन्त द्रव्य का विचार है जो पूर्णतः सुस्पष्ट एवं सुबोध है। स्पिनोजा का कहना है कि ईश्वर की पूर्णता में सब कुछ समाहित है, वह अनन्त है। अनन्तता में अनेक गुण समाहित हैं। अस्तित्व भी एक गुण है, अतः अस्तित्व भी अनन्तता में समाहित है। यदि ईश्वर में अस्तित्व का अभाव होता तो उसकी पूर्णता खण्डित हो जाती, अर्थात् वह अपूर्ण होता। इससे स्पष्ट है कि ईश्वर का अस्तित्व ईश्वर के अनन्त और पूर्ण विचार में निहित है। स्पिनोजा का यह प्रमाण सत्तामूलक है क्योंकि इसके अनुसार ईश्वर की सत्ता उसके पूर्ण और अनन्त विचार में सन्निहित है।[1]

लाइबनिट्ज भी तात्त्विक युक्ति का प्रयोग करते हैं। उनका तर्क सम्भावना और वास्तविकता के अन्तर पर आधारित है। उनका कहना है कि सम्भावना का मूल स्रोत निश्चित रूप से वास्तविक सत्ता में होना चाहिए, अन्यथा कोई भी वस्तु सम्भव नहीं होगी। असीम सत्ता के रूप में ईश्वर का अस्तित्व सम्भाव्य है, क्योंकि ईश्वर प्रत्यय के सम्भाव्य होने में तार्किक दृष्टि से कोई दोष नहीं। ईश्वर का प्रत्यय एक ऐसी सत्ता का प्रत्यय है जो असीम है। अतः इस प्रत्यय के बाहर ऐसा कुछ भी नही जो उसके वास्तविक अस्तित्व में बाधा या दोष उत्पन्न कर सके। इसलिए एक ओर ऐसा कुछ भी नहीं जो ईश्वर के वास्तविक अस्तित्व में बाधक हो, तो दूसरे ओर उसके अस्तित्व की स्वीकृति वास्तविक एवं सम्भाव्य सत्यों के रूप में अनिवार्य है। संक्षेप में, यदि ईश्वर सम्भव है तो उसकी सत्ता है, क्योंकि उसका अस्तित्व

---

1. .....the conception of God as infinite substance is a clear and distinct idea, and as such, and being infinite, it cannot lack one of the qualities, namely existence.

Scanned by TapScanner

उसकी सम्भावना का अनिवार्य परिणाम है। अतः ईश्वर वास्तव में अस्तित्ववान है।[1] लाइबनिट्ज का कहना है कि चिदणु से ही सम्पूर्ण विश्व का निर्माण हुआ है। चिदणु की श्रेणी है। एक श्रेणी से दूसरी श्रेणी में सक्रियता और वास्तविकता का भेद है। जो उच्चतर है वह अधिक सक्रिय और वास्तव है। ईश्वर सर्वोच्च है अतः वह पूर्णतया सक्रिय और वास्तविक है। इससे स्पष्ट है कि सम्भावना के प्रत्यय से ईश्वर की वास्तविकता सिद्ध होती है। हीगेल (Hegel) ने भी तात्विक युक्ति का समर्थन किया है। उनका कहना है कि ईश्वर के प्रत्यय या विचार से ही ईश्वर का अस्तित्व सिद्ध होता है। ईश्वर का प्रत्यय या विचार एक असाधारण और अनुपम प्रत्यय है। विचार या प्रत्यय के अनुपम होने से ही उसकी सत्ता सम्भव है। हीगेल का कहना है कि विश्व के सभी पदार्थ पूर्ण एवं असीम हैं, इसलिए उनके बारे में यह नहीं कहा जा सकता कि उनके विचार में उनका अस्तित्व निहित है परन्तु ईश्वर एक ऐसी सत्ता है जिसके विषय में यह कहा जा सकता है कि उनके विचार में ही उनका अस्तित्व निहित है।

उपरोक्त व्याख्या से यह स्पष्ट होता है कि प्राचीन युग से लेकर आधुनिक युग तक विभिन्न दार्शनिकों ने तार्किक युक्ति का प्रयोग कर ईश्वर की सत्ता को सिद्ध करने का प्रयास किया है। संक्षेप में, यह कहा जा सकता है कि दार्शनिकों ने यह प्रमाणित किया है कि ईश्वर की सत्ता को ईश्वर-विषयक ज्ञान से अलग नहीं किया जा सकता। केयर्ड ने इस युक्ति के सम्बन्ध में स्पष्टतः कहा है कि मन में ईश्वर के विचार मात्र से ईश्वर की सत्ता प्रमाणित होती है। विचार से सत्ता का निष्कर्ष ही इस युक्ति का सार है, जिसे विभिन्न दार्शनिकों ने विभिन्न प्रकार से रखा है।[2]

---

1. .....And the idea of God is that of a being that has no limits and so there could be nothing outside of such and idea to prevent it from existing actually. Since, therefore, there is nothing to prevent either the possible or the actual existence of God on the one hand, and on the other, the assumption of his existences is necessary to serve as the ground that will account for contingent and possible truths. We conclude that God actually exists.

Scanned by TapScanner

है जिससे कि वह अपनी मर्म-व्यथा को अपने उपास्य देव को सुना सके। इस मत में ईश्वर असीम और पूर्ण है, ससीम और अपूर्ण मानव की वहाँ तक पहुँच नहीं हो पाती।

(च) भाषा विश्लेषणवादियों ने इसमें कुछ भाषा सम्बन्धी दोष भी दिखलाये हैं। उनका कहना है कि अस्तित्व को गुण नहीं स्वीकार किया जा सकता और इसको विधेय के रूप में प्रयुक्त नहीं किया जा सकता। उदाहरणार्थ, यदि हमारी जेब में एक रुपया है तो उसका मान सौ पैसे के बराबर होगा और यदि वह रुपया हमारे जेब में नहीं है तो भी उसका मान सौ पैसे के बराबर होगा। इसलिए अस्तित्व न तो कोई विधेय हो सकता है और न कोई स्वतन्त्र गुण ही। हम यह भी निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि ईश्वर तो पूर्ण है और न उसमें सभी गुण अनिवार्य रूप से विद्यमान हैं। इसलिए उसमें अस्तित्व का भी गुण नहीं।

(घ) किन्हीं दो पदों के पारस्परिक सम्बन्ध के आधार पर उनकी सत्ता को सिद्ध नहीं किया जा सकता। पूर्ण सत्ता के विचार से अनिवार्य रूप से अस्तित्व तो अवश्य स्पष्ट होता है परन्तु इससे वास्तविक सत्ता की सिद्धि नहीं होती। यह तो केवल दो पदों के बीच का ऐसा सम्बन्ध है, जिसमें एक से दूसरा प्रकट होता है; परन्तु सम्बन्ध परिभाषा से उत्पन्न नहीं होता है। हम केवल परिभाषा से ही तीन कोणों के योग को दो समकोण के बराबर नहीं मान सकते। इसलिए ईश्वर के विचार में अनिवार्य रूप से अस्तित्व को निहित मानकर ईश्वर की वास्तविक सत्ता नहीं सिद्ध होती।

(ङ) इस तर्क में यह भी एक दोष है कि ईश्वर को एक आवश्यक सत्ता या प्राणी के रूप में मान लिया गया है। हम जानते हैं कि आवश्यक शब्द का प्रयोग तार्किक वाक्यों में होता है। किसी वस्तु या जीव के सम्बन्ध में इस शब्द का प्रयोग करना उचित नहीं जान पड़ता। अतः ईश्वर को आवश्यक प्राणी कहकर आवश्यक शब्द का सही प्रयोग नहीं किया जाता।

तार्किक युक्ति का महत्व—धर्म-दर्शन के विद्वानों ने तार्किक युक्ति या सत्तामूलक प्रमाण का अनेकों प्रकार से खण्डन किया है, परन्तु इससे इस प्रमाण का महत्व कम नहीं होता। इस प्रमाण के द्वारा ईश्वर सम्बन्धी विचार से ही ईश्वर की सत्ता सिद्ध करने का प्रयास किया गया है। इस प्रयास में सफलता चाहे जितनी प्राप्त हो परन्तु यह निस्सन्देह रूप से कहा जा सकता है कि यह अत्यन्त मौलिक युक्ति और प्राथमिक प्रमाण है। किसी भी वस्तु की सत्ता को सिद्ध करने में विचार ही प्रधान है। विचार पर वस्तु की सत्ता निर्भर हो या नहीं परन्तु विचार के बिना वस्तु को सत्ता सिद्ध नहीं हो सकती। इसी दृष्टि से प्रो० केयर्ड ने कहा है कि किसी भी

Scanned by TapScanner